है। सूर्यदेव अपने तेज से प्रकृति में ऐसा वातावरण पैदा करते हैं जिसमें जीव का विकास हो। तेज और शान्त के मिलन से वर्षा होती है जो भूमि पर पड़ने वाला बीज रूप होता है, उससे तरह-तरह के जीव का निर्माण होता हैं फिर यही जीव इस जल की वृष्टि से सक्रिय होकर अपने सहयोगी से सम्भोग क्रिया करके आनन्दित होते हैं। जिसके परिणामस्वरूप अपने जैसे जीव का निर्माण कर पाता है। इतना जान लेने के बाद इस निष्कर्ष पर आते हैं कि सूर्यदेव और जल देवी के गिलन से सृष्टि का निर्माण होता है। इन्हीं दो का मौसम परिवर्तन में सबसे बड़ा योगदान हैं यह क्रिया धीरे-धीरे निश्चित अवस्था पर पहुँचने से होती है। इसलिए मौसम परिवर्तन धीरे-धीरे एक निश्चित अवधि के बाद होता है जिसमें भौगोलिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भूगोल प्रकृति का अंग है और यह प्रकृति जिस प्रकार दो सहयोगी जीवों के मिलन से जीव उत्पन्न करने के लिए सक्रिय हो जाती है उसी प्रकार से सूर्यदेव और जल देवी के मिलन से पूरी प्रकृति सक्रिय हो जाती है चूँकि भूगोल उन्हीं का अंग है इसलिए गुण के अनुसार जीव का निर्माण होता है और मौसम भी उसी अनुसार बनता है।

सूर्यदेव और जलदेवी के बाद इस मौसम परिवर्तन में मानव समाज का सबसे बड़ा योगदान होता है, इन्हीं की जीव रूप में सर्वोपरि सत्ता है, जब गर्मी पड़ती है तो जीवप्राणी के अन्दर गर्मी से बचने के लिए वर्षा होने की स्वाभाविक इच्छा होने लगती है। यह स्वाभाविक इच्छा जब होती है तब तेज जल पर अपना प्रकाश तेज गति से पहुँचता है और यह क्रिया वर्शा का कारण बनती है, जब वर्षा होती है तो प्रकृति में गर्मी के कारण उष्मा बढ़ जाती है और उष्मा के कारण ही जीव प्राणी की उत्पत्ति होती है। जब उष्मा धीरे-धीरे बरसात के कारण शान्त होने लगती है तब प्रकृति ठंडी हो जाती है जिससे जाड़े का मौसम आ जाता है। जब मौसम धीर-धीरे बिल्कुल ठंडा हो जाता है तो उसमें जीव प्राणी अपना विकास करके सम्भोग क्रिया के लिए सक्रिय हो जाते हैं जिसके अन्दर से निकलने वाली गर्मी फिर गर्म मौसम को जन्म देती है। यह क्रिया एक स्वागाविक रूप से चलती है। वर्तमान समय में मानव समाज अत्यधिक प्रदूषण छोड़ता है जिसके परिणमस्वरूप प्रकृति के जीव विकास में विघ्न पैदा हो रहा है जो मौसम परिवर्तन के रूकावट का कार्य कर रहा है सूर्यदेव जलदेवी के सक्रिय मिलने से जीव का निर्माण होता है। इसलिए इनकी भावना का मौसम परिवर्तन मं विशेष महत्व होता है जब यह भवना एक निश्चित मात्रा में पहुँच जाती है तो मौसम परिवर्तन मं बदलाव आ जाता है। जो प्रकृति की सत्यता को पहचानकर प्रकृति में मिल जाता है वह अकेले सक्रिय होकर इतनी भावना छोड़ता है जो कुछ समय के लिए प्रकृति में बदलाव कर देती है यह सारी प्रक्रिया स्वाभाविक गति से होती है। इसलिए एक के हाथ में पूर्ण अधिकार नहीं होता है जो मनचाहे कार्य करा सके। मानव समाज के अतिरिक्त अन्य जीव प्राणी का भी इसमें योगदान होता है। मानव समाज एक विवेकवान प्राणी है इसलिए अन्य जीव-प्राणी के सहयोग को पहचाने और विकास करे। इस प्रकृति पर अपना नया शोध करना चाहिए जिससे जीव प्राणी का विनाश होने से बचाया जा सके।

मानव समाज के अतिरिक्त अन्य जीव प्राणी का भी मौसम में योगदान है। उस योगदान को प्रकृति के गुण के अनुसार ही समझना चाहिए इसमें मोर सबसे पहले आता है जो गर्जना मात्र से आनन्दित होकर सक्रिय हो जाता है और नृत्य करने लगता है यही नृत्य क्रिया इसके आनन्द की अवस्था होती है जो बिना सहयोगी की शारीरिक सम्पर्क, बीज को पथ्वी पर गिराता है जिसे उसकी सहयोगी मोरनी निगल जाती है जो अपने जैसे जीव को उत्पन्न करती हैं इसकी यह क्रिया सहयोगी को स्वाभाविक रूप से अपने पास खींच लेती है। सूर्यदेव और जल देवी का मिलन मोर और मोरनी जैसा होता है। जीव तत्व दो प्रकार के पदार्थ का निर्माण करता हैं एक जो जीव रूप में होता है जिसे किसी भी क्रिया का एहसास होता हैं दूसरा वह तत्व जो निर्जीव होता है जिसे किसी क्रिया का एहसास नहीं होता हैं इसे अलग करने का कार्य बीज रूप करता है मोर निर्जीव तत्व को सबसे अधिक सुन्दर बनाता है जिसे पंख में देखा जा सकता है। मेढक सिर्फ वर्षा में सक्रिय हाते हैं इसलिए वर्षा के मौसम मं इनका विषेश योगदान होता है। इस प्रकार अन्य जीव का अपने गुणों के अनुसार मौसम परिवर्तन होता है।

वृक्ष जो मौ..न परिवर्तन के बाद अपना स्वरूप बदलते हैं इनका मौसम परिवर्तन में विषेश योगदान हाता हैं मौसम परिवर्तन बाद अलग-अलग पोधे का विकास होता हैं ऐसे पौधे के बीज मौसम परिवर्तन में अपना विकास करते हैं। ये पौधे जिस मौसम के होते हैं उसी तरह की भावना छोड़ते हैं जो परिवर्तित मौसम का सहयोग लेकर सक्रिय बनकर बीज का निर्माण करता हैं यह वृक्ष जब मौसम गर्म होता है तो गर्म वायु को खींचते हैं और ठंडी वायु को छोड़ते हैं और मौसम ठंडा होता है तो यह गर्म वायु को छोड़ते हैं और ठंडी वायु को लेते हैं। वृक्ष यह क्रिया वायु को शुद्ध करने के लिए करता है जो मौसम परिवर्तन मे सहायक होता है। इस प्रकार मौसम परिवर्तन में सभी जीव का सहयोग होता है जिसे पहचानकर उसे सुरक्षित करने का कार्य मानव समाज का होता है और वही इस प्रकृति का सबसे अधिक लाभ भी लेता है। जो तत्व इसके लिए ज्यादा सहयोगी है उसका अधिक विकास करना चाहिए।